International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 3, March - 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

छायावाद : एक काव्यान्दोलन

संतोष कुमार यादव (हिन्दी)
शासकीय श्यामा प्र0मुखर्जी महा0
सीतापुर,जिला– सरगुजा छ0ग0

हिन्दी काव्य की विविध प्रवृत्तियों में से छायावाद को देश और काल की दृष्टि से परिनिष्ठित साहित्य के धरातल पर जो व्यापक लोकप्रियता और विशेष प्रशस्ति प्राप्त हो सकी है , वह उसकी अंतर्निहित शक्ति एवं महता का स्वयं प्रमाण हैं। अनेक वर्षों से अनवरत साधना से अनेक प्रबंध – काव्यों और अन्य कृतियों के द्वारा जिस छायावाद का उत्कर्ष हुआ है, उसने न केवल लोकरंजन और रसास्वादन का द्वार सहृदयजनों के लिए खोल दिया है वरन् लोकमंगल की साधना के पुनीत आदर्शों की प्रतिष्ठा भी व्यक्ति और समूह ही चेतना के अंदर की है संभव है, किसी विशेष छाया –काव्य के लोकरंजन और लोकमंगल में से किसी एक तत्व को दूसरे से अधिक महत्वपूर्ण अथवा व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी मानना चाहें, किन्तु इसमे संदेह नहीं है कि छायावाद की परम्परा का गंभीरतापूर्वक विचार करने के उपरान्त वे पायेंगे कि इन दोनों तत्वों के परस्पर संतुलन में ही छायावाद का वास्तविक उत्कर्ष निहित हैं। छायावाद पर विभिन्न दृष्टियों से विचार करने के पूर्व क्या यह अच्छा न होगा की सर्व प्रथम हम जान लें कि **'छायावाद'** है क्या ?

'' छायावाद शब्द हिन्दी में काफी प्रसिद्ध है और काफी उलझा हुआ भी है। छायावाद को लेकर हिन्दी के आलोचकों के बीच काफी वाद–विवाद रहा और वर्षों के व्यर्थ के कोलाहल के बाद भी आज सर्वसम्मत से इसकी कोई परिभाषा नहीं बन पायी है। परिभाषा की संकीर्ण परिधि के अंदर छायावाद का गौरव बंद्ध भी नहीं सका। फिर भी विषय की सम्यक् व्याख्या करने और उसे समझने की जगह उसे दुरूह और रहस्यवाद बनाने में कैसी बुद्धिमानी है, छायावाद संबंधी प्रायः सभी पूर्व –युगीन आलोचनाओं पर यह प्रश्न किया जा सकता है , कहानी आप शायद जानते होंगे, हाथी और सात अंधों वाली । जब हाथी कैसा होगी है उन सात अंधों ने बताया प्रायः वे सभी गलत थे और वे प्रायः ठीक भी थे। छायावाद के प्रारंभिक

आलोचकों के साथ भी कुछ वैसी ही बात नहीं हुई क्या ? वे सभी ठीक हैं पर वे सभी के सभी गलत भी हैं। यदि सहानुभूतिपूर्वक एवं उदार दृष्टि से गंभीरता के साथ विचार किया जाए तभी छायावाद के प्रति समुचित न्याय हो सकेगा।'' (1)

महोदवी लिखते हैं कि '' प्रत्येक सच्चे कलाकार की अनुभूति प्रत्यक्ष सत्य ही नहीं अप्रत्यक्ष सत्य का भी स्पर्श करती है। उसका स्वप्र वर्तमान ही नहीं, अनागत को भी रूपेरेखा में बांधता है और उसकी भावना यथार्थ ही नहीं, संभाव्य यथार्थ को भी मूर्तिमान कर देती है। परन्तु इन सबकी व्यक्तिगत और अनेक रूप अभिव्यक्तियां दूसरी तरफ पहुंचकर ही तो जीवन की व्यक्तिगत एकता का परिचय देने में समर्थ हैं।

हिन्दी साहित्य में आन्दोलन की प्रवृति नयी नहीं है। भक्तिकाल में आन्दोलन का गठन किया गया था। यद्यपि इस काल के कवियों का मिशन साहित्य का प्रसार और प्रचार नहीं था फिर भी उपलब्धि का कोई न कोई रूप सामने आया था। छायावाद भी कविता के एक आन्दोलन के रूप में हमारे सामने आता है। प्रारंभिक स्थितियां कुछ ऐसी थी कि जिनके आधार पर एक सुगठित आन्दोलन की शक्ति नहीं उभरी। यह उसकी हीनता नहीं थी। प्रारंभिक स्थितियों में ऐसा होता ही है। आगे चलकर कविता के विकास क्रम में आन्दोलन की दिशाएं स्पष्ट हुई और सातवें दशक में तो रचना पीछे छूट गयी, आन्दोलन की प्रवृति ही अधिक मुखर होकर सामने आयी। परिणामतः यश का लोभी कवि रचना के स्थान पर आन्दोलन गठित करने लगा, जिससे कविता का संबंध कविता से कट –सा गया। अपने ही घर मं प्रवासिनी हो गयी। यह बात अपने में बड़ी सही है कि काव्य –रचना की कोई सुगठित योजना नहीं चलायी जा सकती। रचनात्मक धरातल पर काव्य का रूप एकांततः व्यक्तिगत होता है। इसलिए वह व्यवस्था और प्रबंध की दीवारों में घिर जाने पर बाधित होता है। जो रचनाएं इन स्थितियों में की जाती हैं उनका मूल्यांकन कमजोर ठहरता है। रचना संबंधी स्वच्छंदता की प्रवृति छायावाद युग के कवियों की विशेषता रही है। तत्कालीन समीक्षकों ने स विशेषता की ओर संकेत किया हैं इतिहास की गतिविधियों से प्रभावित परिणामों की एक संगति होती है। उस संगति का एक प्रतिमान छायावाद भी है। अब हम उसे इसी नाम से अभिहित करने लगे।

इसी समय पं. मुकुटधर पाण्डेय ने 'श्री शारदा' पत्रिका में 'छायावाद' शीर्षक से एक लेखमाला लिखी थी। किसी भी काव्य प्रवृति को किसी एक विशेष विधि से उत्पन्न नहीं माना जा सकता। इस पांच साल में उस प्रवृति की रचनाएं इधर –उधर बिखरी हुई मिल जाएगी। जिस समय देश का और विशेष रूप से हिन्दी का नया खून अभिव्यक्ति के नये –नये ढर्रे खोज रहा था, समाज में राजनीतिक और सामाजिक उथल–पुथल थी, इस संघर्ष को विशेष तीव्र रूप में प्रथम महायुद्ध सन् 1947 के 15 अगस्त के मध्य देखा जा सकता है। कहने के लिए यह अंतराल लगभग तैंतीस साल का है पर अंतराल अंतर्राष्ट्रीय मंच पर घटनाएं बड़ी तेजी घटी और इतना लम्बा समय जैसे बहुत जल्दी बित गया। इन घटनाओं का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हमारे साहित्य पर प्रभाव पड़ा।

छायावादी काव्य एवं रहस्यवाद

द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मक काव्यधारा की प्रतिक्रिया के रूप में छायावादी काव्यधारा का प्रचलन हुआ। छायावादी काव्य धारा के भव्य भवन के चार आधार स्तंभ माने जाते हैं – 1. जयशंकर प्रसाद 2. महाप्राण निराला 3. सुमित्रानंदन पंत 4. महादेवी वर्मा। छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म विद्रोह है। भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम का प्रारंभ 1857 ई. में माना जाता है । भारत में अंग्रेजी का शासन प्रस्थापित हो चुका था। भारत द्रव्य विदेश में जाने लगा था।

अधिकांश भारतीय प्रजा दरिद्रता में जी रही थी , भारतीय जन –जीवन में शिक्षा का अभाव था। अंग्रेजों ने मुम्बई, मद्रास, कलकत्ता आदि में विश्व –विद्यालय खोले थे। यहां बहुत कम भारतीय विद्यार्थियों का शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल रहा था, जो शिक्षा दी जाती थी उसे क्लर्क और बाबु लोग तैयार होते थे। अंग्रेजी शासन को संचालित करने में उसका योगदान रहता था। उस समय बाल–पाल–लाल ने उस समय अंग्रेजी शासन से मुक्त कराने के लिए स्वातंत्र्य संग्राम का शंघनाद किया। धीरे–धीरे आवाज बुलंद होने लगी। अंग्रेजों ने भारतीय की आवाज को कुचलने का प्रयास प्रारंभ कर दिया। भारतीय समाज और संस्कृति को दबाने के अनेक प्रयास किए गए, उस स्वांतंत्र्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, जैसे नारे सामाजिक जन – जीवन में गुंजने लगे। अंग्रेजों ने कठोर शासन के प्रबल अनुशासन द्वारा भारतीय जनों की पुकार को अनसुना कर दिया। अंग्रेजी शिक्षा और अंग्रेजी संस्कृति का प्रयास नव युवकों पर बढ़ता गया। अंग्रेजी रोमान्टिक कवियों के प्रभाव में आकर हिन्दी में

स्वछंदतावादी काव्य लिखे जाने लगे। उसे बंगाली भाषा में लिखा जाने लगा। बंगाली भाषा और साहित्य के प्रभाव से प्रेरणा ग्रहण कर हिन्दी के कवियों ने जो मुक्तक गीति—काव्य के रूप में जो काव्य लिखे उन्हें छायावादी कविता की संज्ञा हिन्दी के प्रमुख आचार्य रामचन्द्रशुल्क ने व्यंग्य में दी। यही व्यंग्यात्मक शब्द कुछ समय बाद इस नवीन काव्य धारा का नाम बन गया। आधुनिक हिन्दी काव्य में द्विवेदी युग से चली यह काव्य धारा सन् 1915 से 1942 तक निरंतर चलती रही। महादेवी वर्मा की गणना इसी छायावादी काव्य स्त्रोततस्विनी के प्रमुख कवियों में होती है। छायावादी काव्य धारा में भावात्मक बाहुल्य पाया जाता है। स्वातंत्र्य —संग्राम को अपेक्षित सफलता नहीं मिल रही थी। इसलिए भारतीय जनता में निराशा व्याप्त थी। साहित्य समाज का दर्पण है, जैसा समाज वैसा साहित्य। साहित्य में समाज की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का प्रतिबिम्ब होता है। भारतीय जन—जीवन की शोषित पीड़ित जनता के मन की अभिव्यक्ति की प्रतिक्रिया के दर्शन छायावादी काव्य में होना संभावित है। महादेवी की साहित्य साधना के संबंध में लिखे डॉ. सुरेश चंद्र गुप्त ने महादेवी के शब्दों में ही कहा है , — '' छायावाद स्थूल की प्रतिक्रिया में उत्पन्न हुआ था। अतः स्थूल को उसी के रूप में स्वीकार करना उसके लिए संभव न हो सका। परन्तु उसकी सौन्दर्य दृष्टि स्थूल के आधार पर नहीं है। यह कहना स्थूल की परिभाषा को संकीर्ण कर देना है।''

आधुनिक हिन्दी साहित्य में छायावादी काव्य —धारा अपना विशिष्ट महत्व रखती है। छायावादी कविता में भावात्मक अभिव्यक्ति तथा प्रकृति चित्रण अधिक होता है। छायावादी कवि प्रकृति पर अपनें भावों का आरोप करता है। वह प्रकृति के माध्यम से अपने हृदयगत सुक्ष्मातिसुक्ष्म भावनाओं को कोमल कांत पदावली द्वारा मुखरित करता है। इसलिए छायावादी काव्य में प्रकृति चित्रण का प्राधान्य होता है। काव्य के भावपक्ष में भाव, बुद्धि और कल्पना का समाहार होता है। छायावादी काव्य में कल्पना का वैभव देखते ही बनता है।बोझिल चेतना और कल्पना बाहुल्य के कारण छायावादी कविता जटिल और दुरूह मानी जाती है। छायावादी कविता में नैसर्गिक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति बिम्ब —प्रतिबिम्ब और प्रतीकों के माध्यम से की जाती है। छायावादी कवि अपनी मौलिक कल्पना एवं भावों को अभिव्यक्त करने का कलात्मक प्रयास करता है। प्रकृति का मानवीकरण छायावादी कवि की प्रमुख विशेषता है।

अर्थ एवं परिभाषा –

छायावाद की स्वच्छंदतावादी जीवन दृष्टि, विद्रोहमूलक भाव चेतना एवं नवीन भाषा शैली की वास्तविक खोज द्विवेदी युग में ही प्रारंभ हो गई थी। द्विवेदी युग की काव्य– साधना तात्कालीन सामाजिक परिस्थितियों से आंदोलित और प्रेरित दिखाई पड़ती है। सांस्कृतिक के ध्वनिकार ने भी इसी प्रकार कहा है –

**''मुक्ताफलेषु छायास्तरलत्वामेवान्तरा।
सलक्ष्यते यदंगेषु तल्लावण्य मिहोच्यते।।''** (2)

मोती के भीतर छाया के जैसी तरलता होती है, वैसे ही क्रांति की तरलता अंग में लावण्य कही जाती है। इस लावण्य को संस्कृत में छाया और अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा अधिक निर्भर करती है। अपने भीतर के मोती का पानी की तरह अंतरस्पर्श करके भाव समर्पण करने वाली अभिव्यक्ति छाया कांतिमय होती है। जबकि इसके पूर्व यह भी कहा गया है कि '' पुराने इसाई संतों'' के छाया भाष तथा यूरोपीय काव्य क्षेत्र में प्रवर्तित आध्यात्मिक प्रतीकवाद के अनुकरण के रची जाने के कारण बंगाल में ऐसी कविता छायावाद कही जाने लगी थी।'' छायावाद की सात्विक मीमांसा प्रस्तुत करने से पूर्व हिन्दी के कवियों एवं आलोचकों की परिभाषाओं को समझ लेना आवश्यक है। जयशंकर प्रसाद ने छायावाद की परिभाषा देते हुए कहा कि – '' जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतियां अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद नाम से अभिहित किया गया है।''

मूलतः छायावाद शब्द का प्रयोग दो रूपों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहां उसका संबंध काव्य –वस्तु से होता है। छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में है। इस प्रकार छायावाद का सामान्य अर्थ हुआ प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करने वाली छाया के प्रति अप्रस्तुत का कथन।''

उत्पत्ति के मूल कारण –

''छायावादी काव्य की उत्पत्ति के मूल कारणों का विवेचन करते हुए डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है कि '' अचल सत्ता और समाज में सुधार की दृढ़ नैतिकता, असंतोष और विद्रोह

(बंधन –मुक्ति) की इन भावनाओं को बहिर्मुखी अभिव्यक्ति का अवसर नहीं देती थी। वे भावनाएं अंतर्मुखी होकर धीरे –धीरे अचेतन में जाकर बैठ रही थी और वहां से क्षतिपूर्ति के लिए छायाचित्रों की सृष्टि कर रही थी। '' (3)

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि छायावादी काव्य को कवियों अपने –अपने शब्दों में लिखने हैं जिन्हें कि वह स्पष्ट रूप से समझा जा सके। हिन्दी काव्य की विविध प्रवृतियों में से छायावाद को देश और काल की दृष्टि से परिनिष्ठित साहित्य के धरातल पर जो व्यापक लोकप्रियता और विशेष प्रशस्ति प्राप्त हो सकी है, वह उसकी अंतर्निहित शक्ति एवं महता का स्वयं प्रमाण है। मनोरंजन और प्रभाान्विति छाया –काव्य वह उसकी अंतर्निहित शक्ति एवं महता का स्वयं प्रमाण है और लोकमंगल – विधानइसकी महता का प्रतीक है। अनेक वर्षो की अनवरत साधना से अनेक प्रबंध – काव्यों और अन्य कृतियों के द्वारा जिस छायावाद का उत्कर्ष हुआ है, उसने न केवल लोकरंजन और रसास्वादन के द्वार सहृदयजनों के लिए खोल दिया है, वरन लोकमंगल की साधना के पुनीत आदर्शों की प्रतिष्ठा भी व्यक्ति और समूह की चेतना अन्दर ही है, किसी विशेष छाया –कृति को देखकर सुधी समीक्षक, छाया काव्य के लोकरंजन और लोकमंगल में से किसी एक तत्व को दूसरे से अधिक महत्वपूर्ण अथवा व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी मानना चाहे, किन्तु इसमें संदेह नहीं है कि छायावाद की परम्परा पर गम्भीरतापूर्व विचार करने के उपरान्त वे पायेंगे कि इन दोनों तत्वों के परस्पर संतुलन में ही छायावाद का वास्तविक उत्कर्ष निहित है। छायावाद पर विभिन्न दृष्टियों से विचार करने के पूर्व क्या यह अच्छा न होगा कि सर्वप्रथम हम यह जान लें कि वास्तव में छायावाद है। क्या ?

छायावाद की भी कुछ ऐसी की कथा है। बीसवीं सदीं के द्वितीय दशक के पूर्वाध से लेकर चतुर्थ दशक के परार्ध तक की प्रमुख काव्य प्रवृति को छायावाद के नाम से अभिहित किया जाता है और बाद की कतिपय रचनाओं में भी इस काव्य प्रवृति न तो सहसा प्रादुर्भूत होती है किन्तु यहां यह ध्यान रखना चाहिए कि कोई काव्य प्रवृति न तो सहारा प्रादुर्भुत होती है और न तिरोहित ही। कोई महान व्यक्तित्व जिस परम्परा को जन्म देता है उसके बहुत पहले से ही क्रिया –प्रतिक्रिया के रूप में उसके निर्माण बीज भी दृष्टिगत होने लगते

हैं। ये बीज पहले प्रच्छत्र अवस्था में विद्यमान रहते हैं और बाद में अनुकूल भूमि तथा साधन प्राप्त कर अंकुरित पुष्पित और फलित होने लगते हैं।

सांख्यों के सत्कार्यवाद के अनुसार कोई नवीन तत्व कभी प्रादुर्भता नहीं। नियत प्राग्वत परवर्ती का कारण होता है और कारण में कार्य की सत्ता सर्वदा विद्यमान रहती है। अतः आश्चर्य नहीं कि कतिपय विद्वान वैदिक साहित्य में द्विवेदी युग पर्यन्त काव्य में भी छायवाद के दर्शन करते हैं। किन्तु जैसा कि बतलाया जा चुका है वास्तविक छायवादी काव्य वही कहा जाएगा जिसका लोक में तथा विवेचकों में छायावाद की संज्ञा से स्वीकृत कर लिया गया है और वह साहित्य द्विवेदी युग की प्रक्रिया की प्रतिक्रिया से उत्पन्न काव्य ही है जिसकी सीमाएं उपर बतलाई जा चुकी हैं।

छायावादी काव्य में छायावादी प्रवृति का अनुसंधान तो किया जा सकता है किन्तु वे कलाकृतियां छयावाद के मुख्य क्षेत्र में नही आती। यही बात परवर्ती काव्य के विषय में भी कही जा सकती है। परवती॑काव्य पर छायावाद का प्रभाव अनुसंधान एक पृथक विषय हो सकता है। समवती काव्य भी छायावाद के मुख्य क्षेत्र में बिल्कुल नहीं आता। अब दो कोटियां शेष रह जाती हैं – अन्वर्थकाव्य और अनुमत काव्य। अनुमत काव्यों के विषय में पहले कहा जा चुका है कि इस प्रकार के कवियों और काव्यों में किसी में भी छायावाद की सभी विशेषताएं प्रतिफलित नहीं होती। एकांगीण तत्व से लेकर उन्हें छायावाादी क्षेत्र में सन्निविष्ट किया जाता है। अतः केवल अन्वर्थ काव्य ही छायावाद के मुख्य क्षेत्र में आता है। छायावाद की कोई परिभाषा अन्वर्थ कवियों और काव्यों को लक्ष्य मानकर ही बनाई जा सकती हैं ।

संदर्भ सूची

1. *आधुनिक हिन्दी काव्य – डॉ. के.सी. पाण्ड्या , पृ. 68*
2. *महादेवी वर्मा के काव्य में समाज एवं संस्कृति – डॉ. कीर्ति कुमार एस. जादव,पृ.62*
3. *महादेवी वर्मा के काव्य में समाज एवं संस्कृति – डॉ. कीर्ति कुमार एस. जादव, पृ.64*